

मनसा सततं स्मरणीयम्, वचसा सततं वदनीयम्।  
लोकहितमम करणीयम्, लोकहितं मम करणीयम्॥

१॥

अनुवाद :

मन से सदा (मुझे) स्मरण (सोचना) करना चाहिए,  
वाणी (मुँह) से सदा (मुझे) बोलना चाहिए (कि)  
संसार का कल्याण मुझे करना चाहिए, संसार का  
कल्याण मुझे करना चाहिए।

न भोगभवने रमणीयम्, न च सखशयने शयनीयम्।  
अहर्निशं जागरणीयम्, लोकहितं मम करणीयम्॥२॥

अनुवाद :

(मुझे) न सुख देने वाले घर में रहना चाहिए और न  
सुख देने वाले बिस्तर पर सोना चाहिए। (मुझे) दिन-  
रात जागना चाहिए (और) संसार का कल्याण मुझे  
करना चाहिए।

---

न जातु दुःखंगणनीयम्, न च निज सौख्यम्  
मननीयम्।

कार्यक्षेत्रे त्वरणीयम्, लोकहितं मम करणीयम्॥३॥

अनुवाद :

(मुझे) कभी भी दुःख का ध्यान नहीं रखना चाहिए  
और न अपने सुख को सोचना चाहिए। (अपने) कार्य  
के क्षेत्र में शीघ्रता करनी चाहिए, (और) संसार का  
कल्याण मुझे करना चाहिए।

दुःखसागरे तरणीयम्, कष्टपर्वते चरणीयम्।  
विपत्ति-विपिने भ्रमणीयम्, लोकहितंमम करणीयम्॥  
४॥

अनुवाद :

(मुझे) दुःख रूपी सागर में तैरना चाहिए, कष्ट रूपी  
पर्वत पर चढ़ना चाहिए, संकट रूपी वन में घूमना  
चाहिए (और) संसार का कल्याण मुझे करना  
चाहिए।

अनुवाद :

(मुझे) दुःख रूपी सागर में तैरना चाहिए, कष्ट रूपी पर्वत पर चढ़ना चाहिए, संकट रूपी वन में घूमना चाहिए (और) संसार का कल्याण मुझे करना चाहिए।

गहनारण्ये घनान्धकारे, बन्धुजना ये स्थिता गह्वरे।  
तत्र मया सञ्चरणीयम् लोकहितं मम करणीयम्॥५॥

अनुवाद :

जो भाई-बन्धु घने अन्धकार में, गहन वन में गुफाओं में रहते हैं, वहाँ मुझे जाना चाहिए (और) संसार का कल्याण मुझे करना चाहिए।

**लोकहितं मम करणीयम् शब्दार्थः**

करणीयम् = करना चाहिए। त्वरणीयम् = शीघ्रता करनी चाहिए। दुःखसागरे = दुःख रूपी सागर में। कष्टपर्वते = कष्ट रूपी पर्वत पर। गहनारण्ये = गहन वन में। गह्वरे = गुफा में।